प्रातःक्लास 29.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

ओमशांति। तुम बच्चों का आज है सतगुरूवार। बाकी जो मनुष्य मात्र हैं उनका है गुरूवार ;क्योंकि बाप तुमको सत्य ज्ञान सुनाते हैं और बाकी वह सभी झूठ ज्ञान ही सुनाते हैं। हर बात में झूठ ही झूठ है। अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर यह हमारा बेहद का बाप है। सभी का(को) बताना है। कोई का(को) पता नहीं है कि हमारा बेहद का बाबा भी है। हद के बाप को, उनकी बायोग्राफी को, वर्से को जानते हैं। बेहद के बाप को नहीं जानते तो उनकी बायोग्राफी को ,वर्से को भी नहीं जानते हैं। बच्चों को समझाया है एक है ज्ञान,दूसरी है भक्ति। ज्ञान से दिन होता है। तुमको बेहद का वर्सा मिलता है 21जन्मों के लिए। लौकिक बाप से अल्पकाल का सुख मिलता है। तो ऐसा जो बेहद का बाप है उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। वह समझाते हैं तुम बच्चों को सतोप्रधान विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तुम बच्चों ने ही बाप से वर्सा पाया है। बाप है एवर पवित्र। .... मनुष्य तो एवर पवित्र हो न सके। क्या यह ल0ना0 एवर पवित्र रहेंगे? तुम पुरुषार्थ करते हो यह बनने लिए तो क्या तुम एवर प्योर रहेंगे? अपवित्र तो जरूर बनना ही है। सीढ़ी नीचे तो जरूर उतरेंगे। तुमको पता थोड़े ही था हम सो देवता थे , फिर हम सो क्षत्री, वैश्य,शूद्र बने हैं। अभी बाप ने समझाया है। तुम पहले2 याद भी .....करते थे। तुम अव्यभिचारी पूजा करते थे। अभी तुम भक्त नहीं हो। अभी ज्ञान मिला है। तुमको कहते हैं इन देवताओं की निंदा क्यों करते हो? क्यों कहते हो एक शिव के सिवाय बाकी सभी की जयंती कौड़ी तुल्य है? बोलना चाहिए पहले तो बताओ अब यह कहां है? भगवानुवाच ,बहुत जन्मों के अंत में मैं आता हूं। तो पतित बन जाते हैं ना। यह तो अभी हैं नहीं। इनकी आत्मा कहां गई?यह भी समझने की बात है ना। भगवान बैठ समझाते हैं यह 84जन्म तो लेते ही हैं। पहला नम्बरवन ही पुनर्जन्म में आते हैं। तो जरूर सभी पुनर्जन्म में आवेंगे। पुनर्जन्म से कोई छूट न सके। बहुत जन्मों के अंत में सब पतित बन जाते हैं। इनकी भी आत्मा पतित बनी है। बाप ने समझाया है। वह तो पतित बन गई है। फिर पतित की पूजा करने से तो और ही पतित बन जावेंगे। वह शरीर तो खलास हो गया और आत्मा पुनर्जन्म लेते2 पतित बन गई है। अभी बाप कहते हैं पतित आत्मा की पूजा करने से क्या फायदा होगा? मैं तो एवर पावन हूं। भक्तिमार्ग में तुम मुझ एक (की) ही भक्ति करते थे। वह थी अव्यभिचारी। अभी भी तुमको एक को ही याद करना है। पूजा तो तुमने बहुत की है। वह सभी हैं पतित। यह सारी दुनियां है ही पतित। पतित को याद करने वा उनकी भक्ति ,दान–पुण्य आदि करने से क्या मिलेगा? यह सब तुम करते आये हो। फायदा तो कुछ हुआ नहीं है। यह सब है रचना। तुमको वर्सा लेना है रचता से ,न कि रचना से। यह तो सभी पतित हैं। एक भी पावन नहीं है। शरीर तो इनकी खतम हो गई। बाकी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गई है। अभी खुद पतित, पतित की पूजा करते। फायदा तो कुछ भी नहीं। तुम गिरते ही आये हो। अभी फिर मैं आया हूं तुमको पावन बनाने। जो पतित बने हैं उनको ही पावन बना रहे हैं। मैं ही पतित–पावन हूं। बाकी तो सभी पतित पापात्माएं हैं। यह(ल0ना0) जो पावन थे वह अभी पतित बन गए हैं। यह तुम भक्ति मार्ग में मूर्ति आदि बनाकर पूजा करते हो। वह आत्मा हैं ना। इसलिए बाप कहते हैं भक्ति दुर्गति है। पापात्माओं की भक्ति करते2 तुम पापात्मा बन गए हो। इस दुनियां में पुण्यात्मा एक भी नहीं। इसलिए तुम्हारी लेन–देन पापात्माओं साथ ही है। पुण्यात्माओं से लेन–देन करने की दरकार ही नहीं। यह तो सतयुग में राज्य करते थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरे। उनकी महिमा क्या करेंगे? जो देवताएं वाममार्ग में गिरे उनकी ही चित्र भक्तिमार्ग बनाकर फिर पूजा बैठ की है। तुम ही खुद पूज्य थे सो फिर पुजारी बने हो। यह बात न समझने कारण मनुष्य कह देते भगवान ही सब रूप धरते हैं। भगवान ही पुजारी बनते हैं। अभी बाप बैठ आत्मा का ज्ञान तुमको देते हैं। पूजा भी आत्मा की होती है। भोगती आत्मा है। बाप कहते हैं मैं अभोक्ता हूं। मैं तो एवर पवित्र रहता हूं। तुमको जब

कहते हैं इनकी (देवताओं) महिमा क्यों नहीं करते हो तो हड्डी समझाना चाहिए। ऐसे भी नहीं एक ही बात कंठ कर लो। बड़ा युक्ति से समझाना है। विचार करना है बरोबर यह बात राइट है। बोलो आत्मा पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बन गई। उनकी हम बैठ महिमा वा पूजा करे , क्या एवजा मिलेगा? कुछ भी नहीं। यह है ही झूठी माया झूठी काया.....। तुम्हारा लेन–देन पतित साथ है। सतयुग मे यह पूजा, दान–पुण्य आदि कुछ भी नहीं होता ;क्योंकि वहां तो तुम पावन हो। यह सारी है नई2 बातें कोई को पता ही नहीं है कि यह अभी कहां हैं। तुमको पता है। बोलो हम उनकी 84जन्मों की जीवन कहानी सुनाते हैं। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित होगा। फिर हम पूजा कैसे करें? आत्माएं सभी पतित हैं। एक बाप ही पावन है उनको ही हम याद करते हैं। सिवाय एक बाप के दूसरा कोई है नहीं। भक्ति पहले अव्यभिचारी थी। अभी व्यभिचारी हो गई है। व्यभिचारी हो गई है। व्यभिचारी भक्ति से क्या फायदा?सन्यासी जो पहले सतोप्रधान थे वह भी अभी उतरते2 84जन्म लेते2 अभी तमोप्रधान बन गए हैं। आजकल तो उनकी भी पूजा करते हैं। हैं तो यह भी पतित ना। पावन तो कोई है नहीं। इसलिए तुमने पूजा भी छोड़ दी है। अभी बाप ने समझाया है मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। लौकिक बाप कब ऐसे कहते हैं क्या कि हमको याद करो? उनको तो सम्भालना ही है। बच्चे को बाप याद आता ही है। यह तो पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे बहुत खुशी से याद करो। अंदर में खुशी में गुल2 होना चाहिए। बाबा अभी तो हम आपको बहुत याद करेंगे। 24घंटे के बदली 50घंटा हो तो भी याद करते रहेंगे। यह अंदर में कहना होता है। बाप कितना फर्स्ट क्लास राय देते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। फिर हम यह बन जावेंगे। भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के मंदिर में जाओ तो वहां और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। सभी के आगे सर झुकाते रहते हैं। गुरुओं के भी मूर्ति बनाकर रखते हैं। पूछना चाहिए तुमने यह मंदिर बनाया है वह आत्माएं कहां हैं? आत्मा तो है नहीं। बाकी क्या पूजा करेंगे वा महिमा करेंगे? बाप ने कहा ही है बहुत जन्मों के अंत में.....तो पतित ठहरा ना। जो ल0ना0 पावन थे वह अभी पतित हैं। यह अच्छी रीत समझाना पड़े ना कि क्यों नहीं उन्हों को याद करते हो? भक्तिमार्ग में याद करते थे। अभी बाप ने ज्ञान दिया है कि यह सब कहां है। 84जन्मों के अंत में तो पतित ठहरे ना। देखो, झाड़ के अंत में खड़ा है। फिर क्यों कहते हो यह दादा को भगवान मानते हो, यह कहते हैं। यह तो समझने की बात है ना। बातें बहुत अच्छी रीत बुद्धि में धारण करनी हैं। बाबा जानते हैं नम्बरवार धारणा होती है। सभी को धारण हो न सके। जो न याद की यात्रा में रहते हैं , न दैवी गुण है, उनको क्या धारणा होगी? बाप कहते हैं तुम मामेकम् याद करो तो मालिक बन जावेंगे। बाप की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं तो नाफरमानबरदार ठहरे ना। बाप कहते हैं अभी वह याद स्थाई नहीं ठहर सकेगी। माया भी(की) लड़ाई इसमें ही होगी। तुम थक मत जाओ और दैवी गुण भी धारण करो। अपन से प्रतिज्ञा करो हम कब रोवेंगे नहीं। किसको दुःख नहीं देंगे। बाप जानते हैं बहुत झूठ बोलते हैं। सच्च कब नहीं बतावेंगे कि फलाने को दुःख दिया। यह भूल की। सच्चे बाप के साथ तो सच्चा रहना चाहिए ना। झूठ भी तो पाप है ना। झट बताना चाहिए हमसे यह भूल हुई। बतलाने से वह बंद हो जावेगा। नहीं तो वृद्धि होती रहेगी। बाबा के पास समाचार आया था कि कहते हैं तुम देवताओं की महिमा नहीं करते हो। कहते हो शिवजयंती ही हीरे तुल्य है तब तो यह ल0ना0 आदि की जयंतियां कौड़ी तुल्य हैं। वह देखते हैं शरीर को। हम तो आत्मा की ....करते हैं ना। आत्मा तो तमोप्रधान है ना। भगवान ने समझाया है देवताएं पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान आय बने हैं। हम भी पहले इन्हों की पूजा करते थे। अभी बाप ने कहा है कि यह सब तमोप्रधान हैं। मेरे को याद करने से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। ऐसी युक्ति से तुम समझाओ

तो हीयर2 हो जावेंगे। कहेंगे यह तो बहुत ठीक समझाती है। खुद ही तमोप्रधान बन खुद ही महिमा करते रहते हैं। जैसे बाबा अपना भी बतलाते हैं। कल हम नारायण की पूजा करते थे। तमोप्रधान बन खुद ही खुद की पूजा करते थे। तब तो कहते हैं भारतवासियों ने खुद को ही मारी है चमाट। आपे ही पूज्य सो आपे ही पुजारी बने हैं। नीचे उतरे ही आये हैं। तो अब बताओ हीरे जैसा जयंती एक के सिवाय किसकी कहें? बाप न होता तो सतोप्रधान कौन बनाता? बाबा प्वाइंट्स तो बहुत अच्छी गुह्य2 देते रहते हैं। बच्चों से यह प्रश्न पूछा है, जरूर मूंझे होंगे। जवाब दे न सके होंगे। इस युक्ति से समझावेंगे तो कहेंगे बात तो बरोबर ठीक है। बरोबर सभी पापात्माएं बन गए हैं। अभी बाप कहते हैं मैं आया हूं हीरे जैसा बनाने। उनकी ही हीरे जैसी जयंती है। सबकी सदगति करने वाला वह है। और तो सभी दुर्गति में है। यह तो अब सुना बहुतों ने ; परंतु वाणी में मजा , वह शक्ति होगी जब योग में रह किसको सुनावेंगे। इसको कहा जाता है जौहर। बाप को याद नहीं करेंगे तो ताकत नहीं मिलेगी। इसका असर नहीं होगा। कहेंगे पता नहीं क्या सुनाते हैं। योग का बल चाहिए। ज्ञान को कमाई कहते, बल नहीं कहेंगे। पतित से पावन बनना योग की बात है। इसलिए बाप कहते हैं योग का सच्चा2 चार्ट भेजो। डायरी में नोट करो इतना समय बाबा को याद किया। फलाने टाइम याद कर सकते थे। क्यों नहीं किया? नोट करना चाहिए। लिखेंगे हमने 5मिनट ,2मिनट भी मुश्किल से याद किया। बाप कहेंगे वाह तुम मेरे को याद नहीं कर सकते हो? तुम पावन बनने नहीं (चाहते) हो। बाबा चार्ट पर एकेक को समझावेंगे। तुम्हारा कैरेक्टर खराब है। मुरली भी नहीं सुनते हो तो अबसेंट हो गए। तुम तो नापास हो जावेंगे। वह होती है हद की पढ़ाई। यह है बेहद की पढ़ाई। बच्चों को यह खयाल में आना चाहिए ओ हो! बाबा उपर से आया है हमको पढ़ाकर भगवान–भगवती बनाते हैं। बाप पढ़ाकर हमको आप समान बनाते हैं। यह किसको भी पता नहीं है। वही जो भगवान–भगवती थे , वह अभी फिर क्या बने हैं। क्या हालत हो जाती है। समझते हैं गांधी रामराज्य स्थापन करके गया है। रामराज्य किसको कहा जाता है? सतयुग क्या चीज, कलियुग क्या चीज है कुछ भी पता नहीं। जैसे कि जंगली जनावर हैं। अभी तुम बदलते2 देवता बन जावेंगे। आधा कल्प रावण का राज्य भी न होगा। इस समय है भक्तिमार्ग की झूठ। सभी आत्माएं झूठी हैं। सच्चे की रत्ती नहीं। तमोप्रधान हैं। जब सच्च की रत्ती भी नहीं रहती है तो सच्चा बाप आकर फिर सच्चा बनाते हैं। यह ज्ञान बुद्धि में आना चाहिए। ऐसे भी नहीं ज्ञान सुनकर फिर घर में जाकर ठिक्कर–भित्तर पर लगावे। नहीं। तुम ऐसे देवता हो तो बात–चीत भी थोड़ी, खान–पान आदि सब रॉयल होना चाहिए। अपनी अवस्था की जांच करनी है। हमारी एक्ट सतोप्रधान है वा रजो, तमोगुणी है। देवताई गुण यहां ही धारण करनी है। जब कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे फिर बाप को बहुत याद करेंगे। बाप के सिवाय और कोई बात नहीं। जैसे वह राम2 जपते हैं ;परंतु अर्थ नहीं समझते। एम ऑब्जेक्ट कुछ नहीं। यहां तो तुम यह बनते हो। बाप कहते हैं तुम ऐसे तब बनेंगे जब ऐसे रहेंगे। जो पावन थे वही फिर पतित बने हैं। फिर हम पूजा किसकी करें? यह ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। युक्तियुक्त समझाने में बड़ी अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। घर में भी तुम मित्र–सम्बंधी आदि को सुनाते रहो। गम के समय ऐसी2 बातें सुनाओ तो खुश हो जावेंगे। पतित आत्मा ने एक पतित छोड़ दूसरा पतित लिया है। सीढ़ी तो उतरना ही है ना। यह तुम समझ सकते हो। हरेक की पढ़ाई चलन से सारा मालूम पड़ता है। बाप तो रहमदिल ,कल्याणकारी है ना। बाप जानते हैं मैं आया हूं राजयोग सिखलाने। राजा बनने लायक तो महारथी ही होंगे। जो अच्छी सर्विस करेंगे वह उंच पद पावेंगे। नहीं तो प्रजा में चले जावेंगे। पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना। बाप तो कहते हैं मैं पढ़ाने आया हूं। नहीं पढ़ते तो लज्जा आनी चाहिए ना। पुरुषार्थ कर नम्बरवन में जाना है। बाप तो बच्चों को कहेंगे पहले नम्बर में जाओ। मेरे को फालो करो। गायन भी है ना फालो फादर। यह तो सुप्रीम फादर है। बाप कहते हैं मेरा पार्ट बिल्कुल अलग है। मैं कब पतित नहीं बनता हूं। और तो सभी पतित बनते हैं। ओम।